ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

''चौधरी चरणसिंह : राजनैतिक पथ पर''

डॉ0 महेन्द्र कुमार
राजनीति विज्ञान विभाग
सहायक आचार्य कला संकाय
विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर

डॉ0 राजेन्द्र कुमार
राजनीति विज्ञान विभाग
सहायक आचार्य कला संकाय टांटिया
टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर

शोध का परिचयात्मक भूमिका

स्वर्गीय चौधरी साहब को लगा कि मंदिरों की यह हालत वैष्णवोचित नहीं कही जा सकती, क्योंकि उन्होंने गांधीजी का भजन सुना था– 'वैष्णव जन तो तैने कहिए पीर पराई जाने रे' तात्पर्य है कि वैष्णव तो वही होता है, जो दूसरों के दर्द को समझता है।' ये मंदिर तो उल्टे दूसरों को दर्द देते है। यहां तो देवता की दासी बनकर रहने वाली नारियों का शारीरिक एवं मानसिक शोषण होता है यहां देवता के दर्शनार्थियों को भी ठगा जाता है।

उनकी श्रद्धा तथा भक्ति का शोषण किया जाता है। तुलसी भी कहते हैं– 'परहित सरिस धर्म नहीं भाई। पर पीड़ा सम नहि अधमाई।' देवता की आढ़ में होते धार्मिक शोषण से, छात्र चौधरी चरण सिंह को, ऐसे धर्म और उसकी आढ़ में जनता का आर्थिक–मानसिक और शारीरिक शोषण करने वालों से अरूचि होना स्वाभाविक था।

प्रस्तावित शोध का उद्देश्य

चौधरी साहब की दृष्टि में, शासन का प्रथम दायित्व, जनता का हित और राष्ट्र को समृद्ध बनाना था। इस विचार की कीमत पर, वह किसी के साथ समझौता करने को तैयार न थे। यथार्थ में, उनकी प्रतिबद्धता, लोकतंत्र के दूसरे एवं असली रूप के साथ थी, जिसका उद्देश्य होता है, लोक का कल्याण, जनता का हित तथा राष्ट्र की समृद्धि। वह लोकतंत्र के

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

पहले रूप को औपचारिक मानते थे, क्योंकि इसका उद्देश्य केवल चुनाव कराना मात्र होता है।

चौधरी चरणसिंह कृषक पुत्र है। उन्होंने वे सारे काम किये हैं जो किसान के लड़के को करने पड़ते है। उन्होंने गाँव का जीवन जिया है, किसानों और खेतिहर मजदूरों की समस्याओं को प्रत्यक्ष रूप से देखा और समझा हैं।

प्रस्तावित शोध का महत्व

इसीलिए गाँवों एवं ग्रामीणों के लिए उनके दिल में बहुत अधिक र्दद है, और इसीलिए उत्तर प्रदेश में उन्होंने जमीन्दारी उन्मूलन के लिए ऐसा अधिनियम बनाया जो सारे देश में बेजोड़ है। अपनी पसन्दगी ओर नापसन्दगी दोनों में मध्यममार्गी न होने और इस कारण विवादास्पद बन जाने के बावजूद वे देश के बेजोड़ राजनैतिक है। पूँजीवादीयों से उनकी दोस्ती नहीं हो सकती, भ्रष्टाचार वे बरदाश्त नहीं कर सकते। वे मोरारजी को तरह निष्काम कर्मयोगी और जयप्रकाश जो की तरह दृष्टा नहीं हैं, तो मुझ जैसे प्रशंसक को उनसे कोई शिकायत नहीं, लेकिन 'बाप से बेटा सवाया, नहीं तो नालायक' के आदर्श के अनुसार अपने बाद की पीढ़ी द्वारा लकीर से हटने और आलोचना की जाने को वे अप्रिय मानते हैं तो उससे जरूर दुःख होता है। भारतीय परम्परा में छोटी अवस्था के लोग अपने से बड़े लोगों के दीर्घ जीवन की कामना नहीं करते, बल्कि आशीर्वाद माँगते है। इसलिए 75 वर्ष पूरे करके जीवन के चौथेपन में प्रवेश करने पर हम भी उनका सादर अभिनन्दन करते हैं।

चौधरी चरण सिंह एक ऐसी राजनैतिक शक्ति बनकर समाज को एक नयी दिशा पर खींच लेगें। समय तो सही है क्योंकि तीस साल की 'टिक–टिकाई' के बाद सारा देश एक नई दिशा के लिए प्यासा है। व्यक्ति भी सही हैं, क्योंकि चौधरी चरण सिंह का तमाम दृष्टिकोण एक ही बुनियादी नीति पर आधारित हैं, जिसको सफल बनाने के लिए उन्होंने अपना सारा राजनैतिक जीवन बाजी पर लगा दिया है, और वह बुनियादी नीति भी ही है क्योंकि जब तक हम उसको सफल नहीं बनाते हमारे देश का कल्याण कभी नहीं हो सकता है।

प्रस्तावित शोध के सोपान

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

वकालत के दौर में चौधरी साहब की एक बड़ी उपलब्धि, राष्ट्रभाषा हिन्दी को प्रोत्साहित करने की रही। वह अंग्रेजी भाषा बहुत अच्छी तरह जानते और लिखते थे। उनकी कई पुस्तकें पहले अंग्रेजी में लिखी गयी हैं, लेकिन बातचीत और व्याख्यानों में वह हिन्दी का प्रयोग सैद्धांतिक रूप से करते थे। वह उन लोगों से नही थे, जो वोट मांगते है हिन्दी में और विधानसभा या लोकसभा में बोलते अंग्रेजी में है।

चौधरी साहब अंग्रेजी के महत्व को स्वीकार अवश्य करते हैं, पर उसको राजभाषा और राष्ट्रभाषा का स्थान देने के लिए तैयार नहीं थे। इसी सिद्धांत के अन्तर्गत, आपने एक मुंसिफ की अदालत में, एक अर्जी–दावा हिन्दी में प्रस्तुत किया था। मुंशी ने उनसे आग्रह किया था, वह हिन्दी में लिखे अर्जी–दावा को वापस ले लें, पर आपने ऐसा नहीं किया। इस पर हिन्दुस्तानी मुंसिफ ने, उनका दावा खारिज करके अपनी गुलाम मनोवृत्ति का परिचय उसी प्रकार दिया, जिस तरह अच्छी हिन्दी जानने वाले लोग भी संसद में अंग्रेजी में बोल कर देते है। चौधरी साहब ने, उसकी अदालत के मुकदमे लेने बंद कर दिये। इससे उनको आर्थिक हानि तो हुई, पर निष्ठा एवं सिद्धांत–निर्वाह का लाभ मिला।

प्रस्तावित शोध का निष्कर्ष

चौधरी साहब समय की पाबंदी के पक्षधर थे। एक दिन वह ठीक इस बजे मेरठ–बोर्ड के कार्यालय पहुंच गये। देर से आने वाले कर्मचारियों के लिए यह एक मौन चेतावनी थी। फलतः जब तक वह चेयरमैन रहे, बोर्ड के सभी कर्मचारी समय पर कार्यालय आते रहे। लोगों को कृर्तव्य–निष्ठ बनाने का यह चौधरी साहब का गांधीवादी तरीका था। चौधरी साहब ने बोर्ड के स्कूलों, सड़कों एवं अन्य प्रतिष्ठानों का निरीक्षण किया। क्षेत्र का व्यापक दौरा करके, बोर्ड को क्षेत्र के लिए उपादेय बनाने का प्रयास किया। कुछ अधिकारियों ने, उनके दौरों का यात्रा–भत्ता–बिल गलत तथा अधिक बनाकर उनके सामने रखा, जिसे चौधरी साहब ने इस आदेश के साथ लौटा दिया कि यह बढ़ा–चढ़ाकर अधिक रूपयों का बनाया गया है। इसको ठीक करके बनाया जाए। भ्रष्ट अधिकारियों के लिए, यह चौधरी साहब का दूसरा गांधीवादी नुस्खा था। उनका उद्देश्य, लोगो के मन में, कर्तव्य के प्रति निष्ठा पैदा करने का था और वह भी दण्ड के द्वारा नहीं, वरन् आत्मा को जगाकर करना था।

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

सन्दर्भ–ग्रन्थ सूची

अग्रवाल, ए.एन. : इण्डियन एग्रीकल्चर, विकास पब्लिसिंग हाऊस, नई दिल्ली, 1981

अग्रवाल, एन.एल. : भारतीय कृषि का अर्थशास्त्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1986 कलेक्टेड वर्क्स ऑफ

महात्मा गांधी : पब्लिकेशन डिविजन, भारत सरकार, वॉल्यूम 14,16,19

कोपलेण्ड, आर. : इण्डियन पोलिटिक्स, 1936–42, ऑक्सफोर्ड, 1944

कोहन, हंस : ए हिस्ट्री ऑफ नेशनलिज्म इन द इस्ट, न्यूयार्क,1929

गांधी, एम.के. : टूवार्ड्स नोन वायलेंट सोसलिज्म, नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद, 1951

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

Copyright © 2020 Authors